अध्याय 25

निवासस्थान के लिए निर्देश (भाग 1)

निर्गमन 25 में आरम्भ में पवित्रस्थान के निर्माण का विवरण शेष पुस्तक पर अधिकार रखता है। तम्बू एक अस्थायी पवित्रस्थान था जहाँ पर परमेश्वर अपने लोगों से उन दिनों में मिलने के लिए आया करता था जब इस्राएली लोगों ने जंगल में समय बिताया। इस समय के बाद अनेक शताब्दियों तक वह अपने लोगों से मिलने के लिए आता रहा। इसके निर्माण और इसमें की जाने वाली सेवा के विषय में दिए गए निर्देश उस व्यवस्था के भाग थे जो परमेश्वर ने सीनै पर्वत पर मूसा के द्वारा इस्राएली लोगों को दी। जैसा कि याजकों का कार्य तम्बू के साथ अत्यन्त निकटता से जुड़ा हुआ था इस कारण याजकीय कार्य से सम्बन्धित निर्देश भी इन अध्यायों में शामिल किए गए हैं।

निर्गमन 25-31 पवित्रस्थान के निर्माण के लिए दिए गए निर्देशों से सम्बन्ध बताती हैं जबकि निर्गमन 35-39 प्रायः लगभग उसी समान भाषा में यह वर्णन करती हैं कि इन निर्देशों को किस प्रकार पूरा किया गया। इन बातों के वर्णन के मध्य में (अध्याय 32-34), पाठ्य सोने के बछड़े से सम्बन्धित इस्राएल के अपने धर्म के त्याग के बारे में, परिणाम के रूप में दण्ड के बारे में और परमेश्वर के द्वारा अनुग्रहकारी होकर अपने लोगों के साथ अपनी वाचा को फ़िर से नया करने के बारे में बताता है। पवित्रस्थान के काम को समाप्त करने और स्वयं परमेश्वर अपनी उपस्थिति के द्वारा इसे आशीषित करने के साथ ही इस पुस्तक का समापन होता है (अध्याय 40)।

अध्याय 25 इस प्रकार आरम्भ होता है कि निर्माण के लिए सामग्री किस प्रकार प्राप्त की जाएगी इसके बारे में परमेश्वर मूसा को बताता है। परमेश्वर ने स्वेच्छा बलि के लिए कहा जो इस्राएलियों के द्वारा अर्पित की जाए (25:1-7)। परमेश्वर के बताए अनुसार विशेषता के साथ पवित्रस्थान के निर्माण के लिए सामान्य आज्ञा देने के बाद परमेश्वर ने (25:8, 9), यह कहते हुए निर्देश देना आरम्भ किया कि पवित्रस्थान में लकड़ी की तीन चीज़ें किस प्रकार तैयार की जाएँ अर्थात वाचा का सन्दूक किस प्रकार तैयार किया जाए (25:10-16), जो

निवास स्थान का निर्माण करना	
निर्गमन 25—31 **किस वस्तु की आवश्यकता थी**	**निर्गमन 35—40** **क्या किया गया**
पवित्रस्थान के लिए भेंटें (25:1–9)	भेंटों के लिए आज्ञा दी गई और पवित्रस्थान के लिए लायी गई (35:4–9, 20–29; 36:2–7)
वाचा का सन्दूक (25:10–22)	सन्दूक (37:1–7)
भेंट की रोटियों की मेज़ (25:23–30)	मेज़ (37:8–16)
सोने की दीवट (25:31–39)	दीवट (37:17–24)
परदे (Curtains), तख्ते, कुर्सियाँ, परदा (veil), परदा (screen) (26:1–37)	परदे, तख्ते (36:8–38)
होमबलि के लिए पीतल की वेदी (27:1–8)	होमबलि की वेदी (38:1–7)
निवास-स्थान का आँगन (27:9–19)	निवास-स्थान का आँगन (38:9–20)
ज्योति के लिए तेल (27:20, 21)	ज्योति के लिए तेल [39:37]
याजकीय वस्त्र (28:1–43)	याजकीय वस्त्र (39:1–31)
याजकों और बलिदानों का शुद्धिकरण (29:1–43)	
धूप जलाने के लिए वेदी (30:1–10)	धूप जलाने के लिए वेदी (37:25–28)
पवित्रस्थान के लिए प्रायश्चित का रुपया (30:11–16)	पवित्रस्थान का मूल्य (38:24–31)
पीतल की हौदी (30:17–21)	पीतल की हौदी (38:8)
अभिषेक का तेल और सुगन्धद्रव्य (30:22–38)	तेल और सुगन्धद्रव्य (37:29)
बनाने वाले लोगों का चुनाव करना (31:1–11)	बनाने वाले लोगों को बुलाया गया और नाम दिया गया (35:10–19, 30–35; 36:1,2; 38:21–23)
विश्रामदिन को मानना (31:12–17)	पवित्रस्थान का कार्य पूरा करना और उसे व्यवस्थित करना; परमेश्वर पवित्रस्थान में प्रवेश करता है (39:32–43; 40:1–37).

प्रायश्चित्त के ढकने और करूबों के साथ हो (25:17-22); वहाँ भेंट की रोटियों के लिए मेज़ हो (25:23-30); और सोने की एक दीवट हो (25:31-39)। जब तक अध्याय 30:1-10 नहीं आ जाता तब तक धूपवेदी का निर्माण किस प्रकार किया जाए जो पवित्रस्थान में लकड़ी का एक अन्य भाग है इसके बारे में कोई निर्देश देखने को नहीं मिलते। एक अन्य उपदेश के साथ इस अध्याय का अन्त होता है कि सब वस्तुओं को "उस नमूने के समान" बनवाया जाए जैसा परमेश्वर ने मूसा को पर्वत पर दिखाया (25:40)।

निवास-स्थान के लिए अंशदान और आदेश (25:1-9)

[1]यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"इस्राएलियों से यह कहना कि मेरे लिये भेंट लाएँ; जितने अपनी इच्छा से देना चाहें उन्हीं सभों से मेरी भेंट लेना। [3]और जिन वस्तुओं की भेंट उनसे लेनी है वे ये हैं; अर्थात् सोना, चाँदी, पीतल, [4]नीले, बैंजनी और लाल रंग का कपड़ा, सूक्ष्म सनी का कपड़ा, बकरी का बाल, [5]लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालें, सुइसों की खालें, बबूल की लकड़ी, [6]उजियाले के लिये तेल, अभिषेक के तेल के लिये और सुगन्धित धूप के लिये सुगन्धद्रव्य, [7]एपोद और चपरास के लिये सुलैमानी पत्थर, और जड़ने के लिये मणि। [8]और वे मेरे लिये एक पवित्रस्थान बनाएँ कि मैं उनके बीच निवास करूँ। [9]जो कुछ मैं तुझे दिखाता हूँ, अर्थात् निवास-स्थान और उसके सब सामान का नमूना, उसी के अनुसार तुम लोग उसे बनाना।"

एक अंशदान लेने के लिए आज्ञा दिए जाने के साथ ही पवित्रस्थान के निर्माण के लिए निर्देशों का आरम्भ होता है (35:4-9 के साथ तुलना करें)। इस अंशदान के बारे में तीन सत्य नोट किए जा सकते हैं: (1) यह अंशदान स्वेच्छाबलि था (2) यह मूल्यवान भेंटों के साथ था (3) जिसका प्रयोग प्रायोगिक उद्देश्यों के लिए किया जाना था।

आयतें 1, 2. स्वेच्छाबलि ऐसे लोगों के द्वारा दिया जाना था **जो अपनी इच्छा से देना चाहता हो**। स्पष्टता के साथ यह **अंशदान** दसवाँश, कर या कोई भार नहीं था जो इस्राएली नेतृत्व के द्वारा थोप दिया गया हो। परमेश्वर के लिए लोगों का प्रेम, कृतज्ञता और आदर मात्र उन्हें बाध्य कर देगा कि वे इसमें अंशदान करें। जॉन आई. डरहम ने कहा कि इस अंशदान के लिए यह अपेक्षा की गई कि यह "एक मुक्त और आनन्ददायक बलि" हो[1]

आयतें 3-7. कहानी का शेष भाग यह बताता है कि लोगों ने उदारता से दिया (देखें 35:20-29; 36:2-7)। यह बलिदान एक समय मात्र का ही अंशदान था। व्यवस्था, नियमित बलिदान की माँग करती थी जिसमें दसवाँश शामिल था (लैव्य. 27:30-32; गिनती 18:21-29; व्यव. 12:6, 11; 14:22-28; देखें 2 इतिहास 31:5, 6, 12; नहेम्य. 10:37, 38; 13:12; आमोस 4:4; मलाकी 3:8-10)। साथ ही, 30:11-16 उस अंशदान के बारे में बताता है जो उस समय करना होता था जब लोगों की गिनती की जाती थी।

इस्राएलियों ने जो दिया वह मूल्यवान था। कुछ मूल्यवान भेंटों का संकेत 38:24-31 में देखने को मिलता है जो उन्होंने स्वेच्छा से दी। अंशदान करने के लिए ये सम्पत्ति उनके पास कहाँ से आयी? इसमें सन्देह नहीं है कि पवित्रस्थान के निर्माण के लिए इस्राएल ने जो एक बड़ा भाग उपलब्ध करवाया वह उन भेंटों से आया जिसे इस्राएलियों ने मिस्रियों से उस समय पाया जब मिस्र से निकलने के समय इसके लिए उन्होंने मिस्रियों से निवेदन किया (3:21, 22; 11:2; 12:33-36। जॉन जे. डेविस ने यह सुझाव दिया,

> अतिरिक्त सामग्री सम्भावित रूप से उस समय प्राप्त की गई जब [इस्राएल] ने रपीदीम में अमालेकियों को हराया (17:8-16)। जितनी सामग्री की आवश्यकता अतिरिक्त रूप से पड़ी वह सम्भावित रूप से उन दलों के साथ व्यापार से प्राप्त किया गया जो सीनै प्रायद्वीप से होकर गए।[2]

मूल्यवान और स्वेच्छिक भेंट होने के बाद भी इस्राएलियों के **सोने** और **काँसे** की भेंटें प्रायोगिक थीं और उपयोगी थीं। जो सोना दिया गया वह वाचा के सन्दूक को ढकने के काम आया और होमबलि की वेदी को काँसे से ढका गया।[3]

आयत 8. परमेश्वर ने मूसा को बताया कि इस्राएलियों को किसका निर्माण करना है और किस प्रकार करना है (देखें 35:30-36:2)। इस्राएलियों के लिए यही कार्य था कि वे **एक पवित्रस्थान का निर्माण** करें। מִקְדָּשׁ *(मिक्दश)* शब्द का शाब्दिक अर्थ है "पवित्रस्थान" (देखें 36:1) और बाद में पुराना नियम में मन्दिर के सम्बन्ध में इसका प्रयोग किया गया (यिर्म. 17:12)।[4] यह पवित्र था क्योंकि परमेश्वर ने इसे पवित्र बनाया था। तम्बू के प्राथमिक उद्देश्य के प्रति यह पद एक सुराग उपलब्ध करवाता है: इसका निर्माण इसलिए किया जाना था कि परमेश्वर **उनके बीच रह सके**।

निश्चित रूप से परमेश्वर जिसने आकाश और पृथ्वी की रचना की वह हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता (प्रेरितों 17:24)। न ही उसे किसी एक स्थान में बाँध कर रखा जा सकता है क्योंकि वह सर्वव्यापी परमेश्वर (भजन 139:7-12) है। फ़िर भी एक विशेष अर्थ में परमेश्वर तम्बू में रहा: वहाँ वह लोगों से मिलता था और विशेष रूप से प्रायश्चित के ढकने पर उनसे मिलता था (25:22)। उसी समान बाद में परमेश्वर मन्दिर में रहा (1 राजा 8:10-13)।

एक अर्थ में तम्बू परमेश्वर के लिए रहने का स्थान था, बाद में मानवजाति से व्यवहार करने के लिए यह एक छाया अथवा प्रतिरूप बन गया।

1. नया नियम के लेखकों ने इसी प्रकार की भाषा का प्रयोग मसीह के मनुष्य रूप में आने के लिए संकेत देते हुए किया। यूहन्ना ने लिखा "और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा" (यूहन्ना 1:14)। उसने यूनानी शब्द "डेरा किया" (σκηνόω, *शकेनो)* का प्रयोग किया जिसका अर्थ "तम्बू" अथवा "तम्बू में डेरा करना" है। (इसी समान शब्द का प्रयोग प्रकाशितवाक्य 21:3 में किया गया है।) इस कारण तम्बू में परमेश्वर का निवास

करना उस कार्य का पूर्व दृश्य है जैसा पुत्र पिता अर्थात शब्द ने उस समय किया जब उसने नए युग का आरम्भ किया। यीशु "शरीर में परमेश्वर" था जिसने मानव शरीर में निवास किया जिससे वह मनुष्यों के बीच अपना डेरा तैयार कर सके।

2. पवित्रस्थान, कलीसिया की एक छाया अथवा प्रतिरूप बन गया। वर्तमान युग में परमेश्वर सब स्थानों में है; परन्तु विशेष रूप से वह कलीसिया में डेरा किए रहता है जिसमें मसीही लोग "आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास-स्थान होने के लिये एक साथ बनाए जाते हैं" (इफ़ि. 2:22; देखें 1 कुरि. 3:16)।

3. पवित्रस्थान और कलीसिया स्वर्ग की पूर्वछाया प्रस्तुत करते हैं। यूहन्ना ने लिखा, "देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है। वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा" (प्रका. 21:3)।

आयत 9. इस्राएलियों के लिए यह आवश्यक था कि वे इस पवित्रस्थान का निर्माण परमेश्वर की इच्छा के अनुसार करें। पवित्रस्थान के निर्माण की पूरी कहानी में इस्राएली लोग जब निर्माण कार्य करते हैं उस समय परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी होने के महत्व पर और जिस प्रकार परमेश्वर ने आज्ञा दी थी ठीक उसी समान उन्होंने किया, इस सच्चाई पर बल दिया गया है। कोल ने लिखा, "परमेश्वर की प्रमुख योजना को पूरा करने के लिए आज्ञाकारिता आवश्यक [थी]।"[5] उनको दिए गए कार्य की सफ़ल समाप्ति का कारण, कम-से-कम कुछ भाग में, उनके द्वारा परमेश्वर के निर्देशों के प्रति चौकस आज्ञाकारिता थी। इब्रानियों 8:4, 5, निर्गमन 25:40 का एक संस्करण काम में लेता है: "और सावधान रहकर इन सब वस्तुओं को उस नमूने के समान बनवाना, जो तुझे इस पर्वत पर दिखाया गया है।" यह पद लेवीय याजकों को नई वाचा की "स्वर्गीय वस्तुओं" की एक "प्रतिलिपि और छाया" के रूप में बताता है।

जब परमेश्वर ने कहा कि वह मूसा को **निवास-स्थान और उसके सब सामान का नमूना दिखाएगा** तब यह सुनने में ऐसा लगता है जैसे परमेश्वर इस्राएलियों से जिस प्रकार का निर्माण चाहता था उसका एक दृश्य प्रदर्शन दिखाने की इच्छा रखता हो। डरहम ने कहा कि पवित्रस्थान की योजना के लिए "सम्भावित रूप से एक दर्शन शामिल हो।"[6] अन्य सम्भावना यह है कि परमेश्वर ने मूसा को किसी प्रकार का एक खाका दिया हो जिससे निर्माण करने वाले लोगों को जानकारी हो जाए कि वह किस प्रकार का निर्माण चाहता है।

वाचा का सन्दूक (25:10-16)

[10]"बबूल की लकड़ी का एक सन्दूक बनाया जाए; उसकी लम्बाई ढाई हाथ, और चौड़ाई और ऊँचाई डेढ़ डेढ़ हाथ की हों। [11]और उसको चोखे सोने से भीतर और बाहर मढ़वाना, और सन्दूक के ऊपर चारों ओर सोने की बाड़ बनवाना। [12]और सोने के चार कड़े ढलवाकर उसके चारों पायों पर, एक ओर दो कड़े और दूसरी ओर भी दो कड़े लगवाना। [13]फिर बबूल की लकड़ी के डण्डे बनवाना, और उन्हें भी

सोने से मढ़वाना। 14और डण्डों को सन्दूक के दोनों ओर के कड़ों में डालना, जिससे उनके बल सन्दूक उठाया जाए। 15वे डण्डे सन्दूक के कड़ों में लगे रहें; और उससे अलग न किए जाएँ। 16और जो साक्षीपत्र मैं तुझे दूँगा उसे उसी सन्दूक में रखना।"

तम्बू में लगाई जाने वाली लकड़ी के बारे में बताने के द्वारा परमेश्वर ने पवित्रस्थान के निर्माण के लिए निर्देश देना आरम्भ किया। स्पष्ट रूप से अपने घर के लिए योजना देने के कार्य में उसने उस वस्तु के साथ आरम्भ किया जो अत्यन्त पवित्र थी - प्रायश्चित के ढकने के साथ वाचा का सन्दूक - और फ़िर वह पवित्र स्थान के बाहर की सजावट की ओर बढ़ गया। तब अध्याय 26 में तम्बू के लिए परमेश्वर ने निर्देश दिए।

आयतें 10, 11. लकड़ी से बनने वाली पहली वस्तु जिसका वर्णन परमेश्वर ने किया वह वाचा का **सन्दूक** था और यह सम्भावित रूप से ऐसा इसलिए था क्योंकि इस सन्दूक ने तम्बू के एक केन्द्र रूप में पालन-पोषण किया था। सन्दूक के ऊपर प्रायश्चित का ढकना होगा, यह वह स्थान था जहाँ पर वास्तव में परमेश्वर इस्राएल के साथ भेंट करने की इच्छा रखता था (25:21, 22)। फ़िर भी इससे पहले कि प्रायश्चित के ढकने का वर्णन किया जाए, सन्दूक के निर्माण के लिए निर्देश दिए जाने थे कि इसे कहा पर रखा जाए।

इब्रानी शब्द אֲרוֹן *('ărôn)*, का अनुवाद "सन्दूक" किया गया है, यह उत्पत्ति 6:14 और निर्गमन 2:3 (KJV) में बताए गए शब्द "सन्दूक" (תֵּבָה, *thebah)* को प्रदर्शित नहीं करता। यहाँ पर "सन्दूक" शब्द के लिए सम्भावित रूप से उत्तम अनुवादित शब्द "बड़ा सन्दूक" रहेगा।[7] NRSV परम्परागत शब्द "सन्दूक का ही प्रयोग करती है परन्तु NIV "बड़ा सन्दूक" जैसे शब्दों का प्रयोग करती है। सन्दूक एक बक्सा अथवा बड़ा सन्दूक था जो लगभग 45" लम्बा, 27" चौड़ा, और 27" ऊँचा (लगभग 4' x 2' x 2') था। हाथ के अनुसार दिया गया यह माप लगभग अठारह इंच का अनुमान प्रदान करता है। यह **बबूल की लकड़ी** से बना हुआ था जो **सोने** से मढ़ा हुआ था।

आयत 9 में मध्यम पुरुष ("तुम") से आयत 10 में अन्य पुरुष (**वे**) में परिवर्तन किया गया है। इसका एक सम्भावित कारण यह है कि इब्रानी पाठ्य के साथ एक समस्या है; NASB मसोराह विषयक पाठ्य के अनुसार चलती है जबकि सेप्टुआजिंट और सामरी पंचग्रन्थ में दोनों आयतों में "तुम" शब्द है। कुछ संस्करण दोनों आयतों में "तुम" शब्द का प्रयोग करते हैं अथवा अर्थ देते हैं (REB; NAB; NJB), जबकि अन्य संस्करण, जैसे कि NASB, आयत 10 में "वे" शब्द को और आयत 11 में **तुम** शब्द को सुरक्षित रखती है (KJV; NKJV; NRSV; ESV)। उदाहरण के लिए, NIV इस प्रकार अनुवाद करती है, "आयत 10 में वे एक सन्दूक बनाएँ" और आयत 11 में "[तुम] इस पर मढ़ना"। सम्भावित रूप से व्यक्ति के विषय में किया गया परिवर्तन महत्वपूर्ण नहीं है।

आयतें 12-15. जैसा कि इस्राएली लोग जंगल में यात्रा पर थे इस कारण सन्दूक को लेकर जाने के लिए व्यवस्था करने की आवश्यकता थी। परिणामस्वरूप,

बक्से के दोनों ओर **सोने के कड़े** बनाए गए थे जिससे डण्डों से उसे उठाया जा सके। **बबूल की लकड़ी** के **डण्डे** बनवाए गए और ये **सोने** से मढ़े हुए डण्डे सन्दूक के कड़ों में स्थायी रूप से रख दिए गए। इस आकृति ने सन्दूक को बिना छूए बिना किसी प्रकार मानवीय सहायता के डण्डों की सहायता से उठाकर चलने की स्वीकृति दी।

आयत 16. सन्दूक के अन्दर **साक्षीपत्र** अर्थात पत्थर की दो पटियाएँ जिस पर दस आज्ञाएँ लिखी हैं (देखें 40:20) को रखा जाएगा । ये पटियाएँ परमेश्वर ने इस्राएल के साथ जो वाचा बाँधी थी उसका चिन्ह थीं। परमेश्वर की पवित्रता के कारण और उसकी व्यवस्था के कारण स्वयं सन्दूक भी पवित्र था और उसे छूआ नहीं जा सकता था।

परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति ने सन्दूक को इस प्रकार घेरा हुआ था कि इसका दुरूपयोग परमेश्वर के लिए अनादर का संकेत देता था और ऐसा करने का अर्थ था भयंकर परिणाम भुगतना (2 शमूएल 6:6, 7)। परमेश्वर की उपस्थिति के चिन्ह के रूप में सन्दूक ने उस समय मार्ग में अगुवाई की जब इस्राएल ने जंगल में कूच किया और लड़ाइयाँ लड़ी। प्रत्येक बार यात्रा के लिए सन्दूक को ऊँचा उठाया गया, यह ऐसा था जैसे कार्य करने के लिए परमेश्वर खड़ा हो गया हो। जब सन्दूक को पवित्रस्थान में फ़िर से स्थापित कर दिया गया तब यह ऐसा था मानो परमेश्वर अपने लोगों में विश्राम करने के लिए फ़िर से लौट आया हो (गिनती 10:35, 36)। कनान में जब इस्राएलियों ने यर्दन नदी को पार कर लिया तब सन्दूक उनके आगे-आगे चला। लोगों के सम्मुख इसके पद ने, जो परमेश्वर की उपस्थिति और ताकत का चिन्ह दे रहा था, उन्हें स्वीकृति दी कि वे सूखी भूमि से होते हुए यर्दन नदी को पार कर लें (यहोशू 4:5-18)।

बारह भेदियों के सम्बन्ध की घटना में यह स्पष्ट है कि सन्दूक के द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति की सच्चाई को देखा जा सकता था (गिनती 13; 14)। जब परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों से कहा कि उन्हें वायदे के देश में प्रवेश करने की स्वीकृति नहीं मिलेगी फ़िर भी इस्राएलियों ने अमालेकियों के विरुद्ध लड़ने पर बल दिया। फ़िर भी न तो मूसा और न ही सन्दूक लड़ने के लिए तम्बू से बाहर निकले। उनकी अनुपस्थिति ने यह संकेत दिया कि परमेश्वर इस्राएल के साथ नहीं था और इस्राएल हार गया (गिनती 14:43-45)।

सन्दूक इस स्तर तक परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतीक बन गया था कि कुछ इस्राएली और साथ ही गैर-इस्राएली लोग सन्दूक को परमेश्वर के समान मानने लगे। लोगों ने सन्दूक के लिए लगभग एक अँधविश्वासी आदर विकसित कर दिया और परमेश्वर की इच्छा से परे अपने उद्देश्यों को पूरा करने एक लिए एक प्रकार के जादुई आकर्षण के रूप में इसका प्रयोग करने का प्रयास किया। 1 शमूएल 4-6 में परमेश्वर ने इस्राएल को सिखाया कि वह सन्दूक तक ही सीमित नहीं था और इस्राएल को विजय देने के लिए बाध्य नहीं था। साथ ही उसने पलिश्तियों को सिखाया कि इस्राएल का परमेश्वर अन्य ईश्वरों से महान था।

इस्राएल की आराधना में केन्द्र बिन्दु सन्दूक बना रहा - वह मात्र जंगल में ही नहीं परन्तु कनान में भी इस राष्ट्र के बसने के बाद भी बना रहा। अन्त में इसे

सुलैमान के द्वारा निर्मित मन्दिर में रख दिया गया। "सन् 586 ई.पू. में यरूशलेम में लूटपाट में सम्भावित रूप से यह नष्ट हो गया।"[8]

सन्दूक के निर्माण के विषय में अध्ययन के द्वारा पवित्रस्थान के बारे में अनेक दृष्टिकोण देखे जा सकते हैं। परमेश्वर के द्वारा जिन वस्तुओं के लिए आज्ञा दी गई वे पवित्रता, मूल्य, उपयोगिता और सुन्दरता के द्वारा अपना गुण प्रकट करती थी। (1) *पवित्रता.* पवित्रस्थान की केन्द्रवस्तु सन्दूक को महा पवित्रस्थान में स्थापित किया गया जहाँ पर परमेश्वर महायाजक से मिलता था। वहाँ से बाहर की ओर पवित्रता का स्तर कुछ कम कर दिया गया। सन्दूक के निकट की लकड़ी और स्थान पवित्र थे जबकि सन्दूक से दूर की लकड़ी और स्थान कुछ कम पवित्र थे। (2) *मूल्य.* पूरा पवित्रस्थान भरपूर और मूल्यवान सामग्रियों से बनाया गया था। फ़िर भी पवित्रस्थान की केन्द्र और अत्यन्त पवित्र वस्तु सन्दूक अत्यन्त मूल्यवान सामग्री सोने से बना हुआ था। (3) *उपयोगिता.* जैसा कि सन्दूक स्वयं में एक चिन्ह का और धार्मिक मूल्य रखता था और जैसा कि यह सोने से मढ़े होने के कारण एक प्रभावी बक्सा रहा होगा, साथ ही इसका एक उपयोगी उद्देश्य भी था: इसमें व्यवस्था की पटियाएँ रखी गईं। (4) *सुन्दरता.* सन्दूक को बनाने के लिए दिए गए निर्देशों में सुन्दरता का सिद्धान्त इसी समान देखा गया है। बक्सा मात्र एक उद्देश्य की ही पूर्ति नहीं करता था परन्तु इसकी आकृति इस प्रकार तैयार की गई कि यह आकर्षक लगता था। परमेश्वर, जिसने यह सुन्दर संसार बनाया उसने अपने लोगों के लिए यह योजना रखी कि उसके लोग उसकी आराधना के लिए एक सुन्दर स्थान का निर्माण करें।

प्रायश्चित्त का ढकना (25:17-22)

[17]"फिर चोखे सोने का एक प्रायश्चित्त का ढकना बनवाना; उसकी लम्बाई ढाई हाथ, और चौड़ाई डेढ़ हाथ की हो। [18]और सोना ढालकर दो करूब बनवाकर प्रायश्चित्त के ढकने के दोनों सिरों पर लगवाना। [19]एक करूब एक सिरे पर और दूसरा करूब दूसरे सिरे पर लगवाना; और करूबों को और प्रायश्चित्त के ढकने को एक ही टुकड़े से बनाकर उसके दोनों सिरों पर लगवाना। [20]उन करूबों के पंख ऊपर से ऐसे फैले हुए बनें कि प्रायश्चित्त का ढकना उनसे ढँपा रहे, और उनके मुख आमने-सामने और प्रायश्चित्त के ढकने की ओर रहें। [21]और प्रायश्चित्त के ढकने को सन्दूक के ऊपर लगवाना; और जो साक्षीपत्र मैं तुझे दूँगा उसे सन्दूक के भीतर रखना। [22]मैं उसके ऊपर रहकर तुझ से मिला करूँगा; और इस्राएलियों के लिये जितनी आज्ञाएँ मुझ को तुझे देनी होंगी, उन सभों के विषय मैं प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर से और उन करूबों के बीच में से, जो साक्षीपत्र के सन्दूक पर होंगे, तुझ से वार्तालाप किया करूँगा।"

आयत 17. वाचा के सन्दूक के ऊपर बक्से के ढकने के काम में आने वाला ढकना **प्रायश्चित्त का ढकना** था। "प्रायश्चित्त का ढकना" इब्रानी शब्द כַּפֹּרֶת

(कप्पोरेथ) के एक अनुवाद के स्थान पर एक व्याख्या है जिसका सामान्य अर्थ "ढकना" है।[9] ऐसा लगता है कि इस शब्द का प्रयोग दोगुने अर्थ के साथ किया गया है: एक अर्थ में यह स्पष्ट रूप से सन्दूक के "ढकने" की ओर संकेत करता है। दूसरे अर्थ में यह इस सच्चाई की ओर संकेत करता है कि इस्राएल के पाप "ढक" दिए गए अथवा उनका प्रायश्चित कर लिया गया है जब प्रायश्चित्त के दिन सन्दूक के "ढकने" पर एक बलिदान का लहू छिड़क दिया गया। इसी शब्द के समान रूप के शब्द का अनुवाद लैव्यव्यवस्था 7:7 में "प्रायश्चित" शब्द के साथ किया गया है; साथ ही लैव्यव्यवस्था 23:27-32 में "प्रायश्चित के दिन" का वर्णन किया गया है। यह दिन इब्रानी शब्द "योम किप्पुर" के नाम से जाना जाता है जिसका अर्थ है "ढकने का दिन।" आज भी यहूदी लोग इसका पालन करते हैं।

आयतें 18-21. जैसा कि स्थान की सटीकता के बारे में हम देखते हैं जहाँ पर परमेश्वर अपने लोगों से मिलता था और उनसे बात करता था, यह आवश्यक था कि **करूबों** के साथ, "प्रायश्चित का ढकना" अथवा "ढकना" शुद्ध **सोने** से बना हुआ हो। "करूबों" (כְּרֻבִים) शब्द, "करूब" (כְּרוּב) शब्द का बहुवचन रूप है। करूबों के बारे में बाइबल से अधिक जानकारी प्राप्त नहीं की जा सकती। यह पाठ्य कहता है कि उनके **मुख** और **पंख** थे और वे एक-दूसरे के सामने आकार में इतने छोटे थे कि वे एक-दूसरे को 45" गुणा 27" के स्थान से अपने-अपने छोर से देख सकें। जिस प्रकार परमेश्वर ने करूबों को अदन की वाटिका पर पहरा देने का काम दिया जब आदम और हव्वा ने पाप किया (उत्पत्ति 3:24), वे उपयुक्त रूप से ऐसे मधुर दूत नहीं हैं जैसा लोग उनके बारे में कल्पना रखते है:

> करूब किसी पुनर्जागरण कला के पंख रखने वाले कोई कामदेव नहीं थे परन्तु प्राचीन मेसोपोटेमियाई और सीरिया फ़िलिस्तीनी कला के पंखों के साथ मानव-सिर रखने वाले शेर थे। वे प्राचीन निकट पूर्व में शाही सिंहासनों के बगल पर हाथ के आराम के लिए अथवा सजावट के काम में आते थे ... । तब सन्दूक इस्राएल के अदृश्य परमेश्वर के लिए प्रतीक के रूप में एक सिंहासन था (1 शमूएल 4:4), जो करूबों के बीच में आदर पाता था और अपने लोगों के बीच शासन करता था जब वह उनसे वहाँ पर मिलता था (निर्गमन 25:22)।[10]

कोल ने कहा कि "वे उपयुक्त रूप से मानव-मुख के साथ पंख रखने वाले नरसिंह थे।"[11]

दस आज्ञाओं में दूसरी आज्ञा कहती है, "तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के जल में है। तू उनको दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना" (20:4, 5)। किसी ने यह कहते हुए इस आज्ञा की व्याख्या की कि किसी भी कारण से किसी भी प्रकार की आकृति बनाना गलत है। यह सत्य कि प्रायश्चित के ढकने पर रखने के लिए परमेश्वर ने करूब बनवाए और पवित्रस्थान के अन्दर के पर्दे पर उनकी नक्काशी करवाई (36:35), यह प्रदर्शित करती है कि आराधना करने के उद्देश्य से तैयार की गई किसी भी प्रकार की आकृति के लिए यह आज्ञा मना करती है। करूब

इसलिए नहीं थे कि उनकी आराधना की जाए; इस कारण आज्ञा को तोड़ा नहीं गया।

आयत 22. परमेश्वर ने कहा, **"मैं उसके ऊपर रहकर तुझ से मिला करूँगा।"** प्रायश्चित का ढकना ऐसा स्थान था जहाँ पर परमेश्वर अपने लोगों से मिलता था। बाद में इस्राएल के इतिहास में लोगों को समझ में आया कि सेनाओं का यहोवा "करूबों के ऊपर" (1 शमूएल 4:4) विराजता है। वहाँ से मूसा को दिए गए प्रकाशनों के माध्यम से परमेश्वर ने लोगों को निर्देश दिए। वर्ष में एक बार वह वहाँ पर प्रायश्चित के लिए उनसे मिलता था जब महायाजक महा पवित्रस्थान में जाता था और प्रायश्चित के ढकने पर लहू छिड़कता था (इब्रा. 9:5, 7)।

परमेश्वर की व्यवस्था के बारे में बताने का एक तरीका **साक्षीपत्र** है और विशेष रूप से पत्थर की दो पटियाएँ जिन में व्यवस्था का हृदय अंकित था। अंबरटो कस्सुटो ने कहा कि ये पटियाएँ अवश्य रूप से "ऐसी पटियाएँ होनी चाहिए जिन पर मूसा के द्वारा लिखित बाइबल विषयक आज्ञाएँ अंकित की गई [34:28], और जो इसलिए साक्षीपत्र कहलाती है क्योंकि यह परमेश्वर और इस्राएल के वंशजों के बीच स्थापित की गई वाचा की गवाही देता है।"[12] सम्भावित रूप से "साक्षीपत्र" के रूप में इन पत्थर की पटियाओं के बारे में कहना यह भी अर्थ प्रदान करता है कि वहाँ पर लिखी गई व्यवस्था इस्राएल के विरुद्ध गवाह के रूप में खड़ी होगी अगर इस्राएल व्यवस्था को अनदेखा करता है अथवा तोड़ता है।

परमेश्वर ने कहा कि वह **प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर से** और **करूबों के बीच में से** इस्राएल से वार्तालाप किया करेगा। ऊपरी तौर से जंगल में तम्बू में से मूसा ने परमेश्वर के निर्देश प्राप्त किए। इसके बाद, "करूबों के बीच में से" परमेश्वर के द्वारा नियमित रूप से नए निर्देश दिए जाने के बारे में कोई साक्ष्य नहीं मिलते।

भेंट की रोटियों की मेज़ (25:23-30)

[23]"फिर बबूल की लकड़ी की एक मेज बनवाना; उसकी लम्बाई दो हाथ, चौड़ाई एक हाथ, और ऊँचाई डेढ़ हाथ की हो। [24]उसे चोखे सोने से मढ़वाना, और उसके चारों ओर सोने की एक बाड़ बनवाना। [25]और उसके चारों ओर चार अंगुल चौड़ी एक पटरी बनवाना, और इस पटरी के चारों ओर सोने की एक बाड़ बनवाना। [26]और सोने के चार कड़े बनवाकर मेज के उन चारों कोनों में लगवाना जो उसके चारों पायों में होंगे। [27]वे कड़े पटरी के पास ही हों, और डण्डों के घरों का काम दें कि मेज़ उन्हीं के बल उठाई जाए। [28]डण्डों को बबूल की लकड़ी के बनवाकर सोने से मढ़वाना, और मेज उन्हीं से उठाई जाए। [29]और उसके परात और धूपदान, और चमचे और उंडेलने के कटोरे, सब चोखे सोने के बनवाना। [30]और मेज़ पर मेरे आगे भेंट की रोटियाँ नित्य रखा करना।"

अध्याय 25 का शेष भाग लकड़ी की तीन वस्तुओं में से दो वस्तुओं का वर्णन करता है जिन्हें तम्बू के पवित्रस्थान के मध्य रखा जाना था - वे हैं भेंट की रोटियों

की मेज़ और दीवट। इन वस्तुओं को तैयार करने में सोने का भी प्रयोग किया गया।

आयतें 23, 24. भेंट की रोटियों की **मेज़** लगभग 36" लंबी, 18" चौड़ी और 27" ऊँची (लगभग 3' x $1^1/_2$' x 2') थी। उसे बबूल की लकड़ी से बनाया जाना था, वही लकड़ी जिसका वाचा के संदूक को बनाने के लिए प्रयोग किया गया था। साथ ही, संदूक के समान, इसे भी **सोने** से मढ़ा जाना था।

आयतें 25-28. संदूक के समान, मेज़ को भी ऐसा बनाया जाना था कि उसे **सोने के कड़ों** और **डंडों** के द्वारा उठाकर एक से दूसरे स्थान को ले जाया जा सके।

आयत 29. बर्तनों को (**परात, धूपदान, चमचे**, और **उंडेलने के कटोरे**) जिन्हें मेज़ के साथ प्रयोग होना था **चोखे सोने** के बनने थे। ये बर्तन, या इनके जैसे बर्तनों को, बाद में नबूकदनेस्सर और बाबुल के लोग युद्ध की लूट में ले गए (2 राजा 25:13-17; एज्रा 1:7-11)।

आयत 30. वह **मेज़** न केवल सुन्दर थी, वरन उपयोगी भी थी: उस पर **भेंट की रोटियां** रखी जाती थीं। ये बारह रोटियां होती थीं जो निरन्तर मेज़ पर रखी रहती थीं। प्रति सब्त के दिन पुरानी रोटियों के स्थान पर नई रोटियां रख दी जाती थीं, और केवल याजकों को पुरानी रोटियों को खाने का अधिकार था (लैव्य. 24:5-9)। यद्यपि लेख प्रतीक होने को समझाता तो नहीं है, रोटियां संभवतः इस्राएल के बारह गोत्रों का प्रतीक थीं। हो सकता है कि यह इस बात को स्मरण करवाने के लिए था कि उन्हें अपने आप को एक जाति के समान देखना था। रोटियों का निरन्तर मेज़ पर होना दिखाता था कि वे परमेश्वर के लोग थे और सदैव उसकी उपस्थिति में रहते थे।

भेंट की रोटियों की मेज़ और दीवट रोम में टाईटस की मेहराब के अन्दर के दृश्य का भाग हैं। यह स्मारक, जिसे बाद में टाईटस के भाई डोमिशीयन ने बनवाया था, 70 ई. में यहूदियों पर रोमियों की विजय के उपलक्ष में था। मेज़ और दीवट को यरूशलेम से लूट में ले लिया गया था और विजय जुलूस में रोम में ले जाया गया।

दीवट और मेज़ जैसे के टाईटस की मेहराब (रोम) में दिखाए गए हैं

सोने की दीवट (25:31-40)

31"फिर चोखे सोने की एक दीवट बनवाना। सोना ढलवाकर वह दीवट, पाये और डण्डी सहित बनाया जाए; उसके पुष्पकोष, गांठ और फूल, सब एक ही टुकड़े के बनें; 32और उसके किनारों से छः डालियां निकलें, तीन डालियां तो दीवट के एक ओर से और तीन डालियां उसकी दूसरी ओर से निकली हुई हों; 33एक एक डाली में बादाम के फूल के समान तीन तीन पुष्पकोष, एक एक गांठ, और एक एक फूल हों; दीवट से निकली हुई छहों डालियों का यही आकार या रूप हो; 34और दीवट की डण्डी में बादाम के फूल के समान चार पुष्पकोष अपनी अपनी गांठ और फूल समेत हों; 35और दीवट से निकली हुई छहों डालियों में से दो दो डालियों के नीचे एक एक गांठ हो, वे दीवट समेत एक ही टुकड़े के बने हुए हों। 36उनकी गाँठें और डालियां, सब दीवट समेत एक ही टुकड़े की हों, चोखा सोना ढलवाकर पूरा दीवट एक ही टुकड़े का बनवाना। 37और सात दीपक बनवाना; और दीपक जलाए जाएं कि वे दीवट के साम्हने प्रकाश दें। 38उसके गुलतराश और गुलदान सब चोखे सोने के हों। 39वह सब इन समस्त सामान समेत किक्कार भर चोखे सोने का बने। 40और सावधान रहकर इन सब वस्तुओं को उस नमूने के समान बनवाना, जो तुझे इस पर्वत पर दिखाया गया है।"

आयतें 31, 32. पवित्र स्थान की एक अन्य विशेषता थी **दीवट**। करूबों और प्रायश्चित के ढकने के समान, इसे भी **चोखे सोने** से बनाया जाना था। उसकी **पाये** से ऊपर उठती हुई एक **डण्डी** होनी थी, जिसके ऊपर दीपक हो और उसमें से **छः डालियां** निकलें, प्रत्येक पर एक-एक दीपक हो। परिणामस्वरूप सात दीपक थे (25:37)। दीवट के लिए इब्रानी शब्द है מְנוֹרָה *(मेनोरह)*। मेनोरह एक "सात-डालियों वाला दीवट" होता है जो "यहूदी धर्म का महान चिन्ह बन गया है।"[13]

आयतें 33-36. दीवट उपयोगी भी था, प्रकाश देने के लिए, और सुन्दर भी। उदाहरण के लिए कलात्मक रीति से बने हुए **बादाम के पुष्पकोष** और **फूल**, प्रकाश देने के उसके कार्य के लिए आवश्यक नहीं थे। प्रकट है कि परमेश्वर चाहता था कि जिस स्थान पर वह इस्राएल से मिले वह सौंदर्य को ध्यान में रखते हुए मनभावना हो।

आयतें 37-39. वे **दीपक** तम्बू के भीतर **प्रकाश** देने वाले एकमात्र थे। चिन्ह के रूप में, दीवटों का काम यह स्मरण दिलाना रहा होगा कि परमेश्वर ही प्रकाश का एकमात्र स्त्रोत है - इस्राएल को जिस ऊपर के प्रकाश की आवश्यकता थी उसका अस्तित्व विद्यमान था।

आयत 40. दीवट का विवरण देने के पश्चात, परमेश्वर ने लोगों को पुनः सचेत किया: **सावधान रहकर इन सब वस्तुओं को उस नमूने के समान बनवाना, जो तुझे इस पर्वत पर दिखाया गया है।** अध्याय 25 में निवासस्थान को बनाने के लिए दिए गए निर्देश आयत 9 और 40 के समान आग्रहों के मध्य रखे गए हैं। "नमूने" के विषय आयत 9 कहती है "जो कुछ मैं *तुझे दिखाता हूं*," और आयात 40 कहती है

"जो तुझे इस पर्वत पर *दिखाया गया है"* (बल दिया गया)। काल में भिन्नता पर ध्यान दीजिए। सम्भवतः आयत 9 में परमेश्वर ने नमूना दिखाना आरंभ नहीं किया था, परन्तु उसने नमूना दिखा दिया हो - कम से कम सामग्री के उस भाग का जिसकी चर्चा की गई - जब तक उसने मूसा से आयत 40 में बात की।

> दीवट के महत्व के विषय में कोल ने निम्न संभावनाओं का सुझाव दिया: हमें इस प्रतीक का ... अर्थ नहीं बताया गया है। कुछ का मानना है कि दीवट का अभिप्राय था इस्राएल का अन्यजातियों के लिए प्रकाश का कार्य करना (यशा. 60:3)। निश्चय ही सात सदा ही सिद्धता का चिन्ह रहा है: जबकि तेल, कम से कम बाद में तो, परमेश्वर के आत्मा को चित्रित करता था (जकर्याह 4:1-6)। प्रतीक वह प्रकाश हो सकता है जो परमेश्वर की उपस्थिति उसके लोगों में लाती है (गिनती 6:25), उस प्रकाश को स्मरण करना, पुराने नियम में, जीवन और विजय का भी चिन्ह है (भजन 27:1)।[14]

अनुप्रयोग

निवासस्थान: "आने वाली भली वस्तुओं की छाया" (25:1-9)

निर्गमन के पिछले सोलह अध्यायों पर निवासस्थान को बनाने की कथा का अधिकार रहा है। क्यों? क्योंकि निवासस्थान परमेश्वर की उपस्थिति का चिन्ह था। निर्गमन के अन्त में, निवासस्थान बनकर तैयार होता है और उसे लगाया जाता है। उस समय "तब बादल मिलापवाले तम्बू पर छा गया, और यहोवा का तेज निवासस्थान में भर गया" (40:34)। इसलिए निर्गमन की पुस्तक यह दिखाती है कि कैसे परमेश्वर के लोग जो मिस्र में दास थे, वे परमेश्वर के निवास का स्थान कैसे बन गए।

अपने संदर्भ में निवासस्थान का बनाया जाना जितना भी महत्वपूर्ण है, वह नए नियम के मसीहियों के लिए भी अपने अर्थ में महत्वपूर्ण है। मसीही के लिए निवासस्थान के महत्व को इब्रानियों के लेखक ने सुस्पष्ट किया, जब उसने कहा "आने वाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है, पर उन का असली स्वरूप नहीं" (इब्रा. 10:1)। लेखक निवासस्थान और नए नियम की कलीसिया में बहुत सी तुलनाओं की ओर संकेत करता है और यह अभिप्राय देता है कि ऐसी ही अन्य भी देखी जा सकती हैं (इब्रा. 9:1-5)। मसीही कलीसिया के विषय में निवासस्थान से क्या सीख सकते हैं?

निवासस्थान कैसा था - और वह कलीसिया की छाया कैसे है? निवासस्थान आँगन में लगे हुए तम्बू के समान था। तम्बू के अन्दर दो कक्ष थे, पवित्र स्थान और महापवित्र-स्थान। पवित्र स्थान में तीन सामग्री थीं: भेंट की रोटी की मेज़, धूपवेदी, और सुनहरा दीवट। महापवित्र-स्थान के अन्दर वाचा का संदूक था। उस संदूक का ढक्कन प्रायश्चित का ढकना कहलाता था। प्रायश्चित के ढक्कन के दोनों ओर दो करूब थे जिनके पंख उसे ढाँपे रहते थे। आँगन में होमवेदी थी और पानी के लिए हौद था जिसमें से याजक पवित्र-स्थान में जाने से पहले अपने आप को धोया करते थे।

इन वस्तुओं को आराधना और बलिदानों में कैसे प्रयोग किया जाता था? कोई भी इस्राएली चढ़ाए जाने वाले बलिदान को लेकर आँगन में जा सकता था। होमवेदी को प्रतिदिन व्यवस्था के अनुसार चढ़ाए जाने वाले अनेकों बलिदानों के लिए प्रयोग किया जाता था। हौद में पानी रहता था जिससे याजक पवित्र-स्थान में अपनी सेवा के लिए जाने से पहले प्रतिदिन अपने आप को साफ़ करते थे। केवल महायाजक ही महापवित्र-स्थान में जा सकता था, और वह वहाँ वर्ष में एक बार प्रायश्चित के एक ही दिन के लिए जाता था, अपने और इस्राएल के लोगों के लिए प्रायश्चित करने के लिए।

निवासस्थान नए नियम के युग का पूर्वाभास किस प्रकार प्रदान करता है? जब हम कलीसिया में पाई जाने वाली वास्तविकताओं पर पुराने नियम की वास्तविकताओं की परछाइयों को लागू करते हैं तो हमें बहुत सावधानी बरतनी चाहिए। हम बाइबल अध्ययन की इस विधि का दुरूपयोग कर सकते हैं और जो वह नहीं कहती है बाइबल से वह बात भी कहलवा सकते हैं। इस विधि को हम सुरक्षित कैसे प्रयोग कर सकते हैं? परछाईं किस वास्तविकता को दर्शाती है हम उसके बारे में निश्चित तब ही हो सकते हैं जब हम स्मरण रखें कि हम निश्चितता के साथ केवल वह ही बात कहें जिसे बाइबल भी कहती है।

निवासस्थान की अनेकों वस्तुएँ ने नियम के युग की वस्तुओं के समान प्रतीत होती हैं: भेंट की रोटी प्रभु भोज के समान; दीवट परमेश्वर के वचन के समान; धूपवेदी प्रार्थना के समान; हौद से धोया जाना बपतिस्मा के समान; पवित्र-स्थान कलीसिया के समान; और महापवित्र-स्थान स्वर्ग के समान। यदि ये बातें पवित्र-शास्त्र में स्पष्ट नहीं बताई गई हैं तो हमें इन तुलनाओं के विषय में कट्टर नहीं होना चाहिए।

परन्तु निवासस्थान के विषय में कुछ बातें हैं जिनकी नया नियम विशेषतः मसीही युग के साथ तुलना करता है। इब्रानियों मसीह यीशु की तुलना पुराने नियम के महायाजक के साथ करता है और यीशु द्वारा अपने आप को बलिदान करने को पुरानी वाचा के अन्तर्गत चढ़ाए गए बलिदानों से तुलना करता है। इसके अतिरिक्त, नया नियम हमें सिखाता है कि मसीही होने के कारण हम सभी याजक हैं जो परमेश्वर को बलिदान अर्पित करते हैं (रोमियों 12:1, 2)। क्योंकि निवासस्थान में परमेश्वर अपने लोगों से मिलता था इसलिए निवासस्थान की तुलना कलीसिया से करना भी उचित है; यह परमेश्वर की उपस्थिति का चिन्ह है और वह इस्राएल के मध्य में था। इसी प्रकार से, नया नियम कलीसिया को परमेश्वर का निवास स्थान बताता है, इस चित्रण को मंदिर से लेकर (जो इस रूप में निवासस्थान के समान था)। इसलिए परमेश्वर हम में निवास करता है!

निवासस्थान कैसे बनाया गया - और उसके भवन को आज की कलीसिया से कैसे संबंधित किया जा सकता है? पहला, वह परमेश्वर की योजना के अनुसार बनाया गया (25:9; 40:16)। दूसरा, वह अच्छे नेतृत्व द्वारा बनवाया गया। परमेश्वर ने उन लोगों को उपलब्ध करवाया जिन्होंने निवासस्थान के वास्तविक निर्माण में अगुवाई की (31:1-6; 35:10, 30-35)। तीसरा, यह सारी मण्डली

द्वारा दी गई उदार भेंटों और सहायता से बना (35:4-9, 21, 22, 29; 36:1-7)। मण्डली से और अधिक देने के लिए विनती करने के स्थान पर, जैसा कि वर्तमान में बहुधा होता है, उस समय के अगुवों को लोगों से विनती करनी पड़ी थी कि वे देना बन्द करें! वे बहुत अधिक दे रहे थे। ये सभी कलीसिया से संबंधित उदाहरण हो सकते हैं।

उपसंहार. हमें हमारे महायाजक यीशु, यीशु के बलिदान, और याजक के समान उसके निकट आने के अवसर के लिए परमेश्वर का धन्यवादी होना चाहिए। हमें सहर्ष अपने बलिदान परमेश्वर को अर्पित करने चाहिए। मसीह की कलीसिया को बनाने के लिए, हमें (1) परमेश्वर के निर्देशों का पालन करना चाहिए, (2) अच्छे नेतृत्व का उपयोग करना चाहिए, और जिन भी संसाधनों से परमेश्वर ने हमें आशीषित किया है उनमें से उदारता के साथ देना चाहिए।

परमेश्वर का निवास (25:8)

निवासस्थान को वह स्थान होना था जहाँ परमेश्वर अपने लोगों में निवास करता। आज परमेश्वर कलीसिया में निवास करता है (1 कुरि. 3:16; इफि. 2:21, 22)। वह प्रत्येक मसीही में भी निवास करता है (रोमियों 8:9; 1 कुरि. 6:15-20; गला. 4:6)। इसलिए हमें अपने शरीरों को प्रभु को समर्पित करना चाहिए (रोमियों 12:1, 2), और उन्हें शुद्ध रखना चाहिए (1 कुरि. 16:19, 20)।

"यात्रा में बढ़ना" (25:12-15, 26-28)

एक पुराना गीत कहता है, "मैं आगे यात्रा करते रहना चाहता हूँ।" निवासस्थान यात्रा के लिए बनाया गया था; उसके यात्रा के अनुरूप होने का प्रमाण उसके कड़े हैं और वे डण्डे जो संदूक के साथ जोड़े जाते थे, भेंट की रोटियों की मेज़, और वेदी। इस्राएली जंगल में चालीस वर्ष तक घूमते रहे देश में परदेशियों के समान, किसी एक स्थान पर कभी नहीं बसे। इसी प्रकार आज इस संसार में मसीही भी "यात्री और परदेशी" हैं (1 पतरस 2:11)। हमें भी सुनिश्चित करना है कि हम किसी स्थान पर "बस न जाएँ" और इस संसार को अपना स्थाई घर न समझने लगें। हम अपने विश्वास के गीत के अनुसार जीवन व्यतीत करें, जो घोषणा करता है, "मैं यहाँ परदेशी हूँ, पराए देश में; मेरा घर दूर बहुत दूर सुनहरे स्थान में है।"[15]

परमेश्वर से मिलें - कहाँ? (25:22)

यहोवा ने कहा कि वह इस्राएलियों से निवासस्थान में प्रायश्चित्त के ढकने पर मिलेगा (25:22) और वहाँ वह उनके मध्य निवास करेगा (29:43, 45)। आज मसीही प्रभु से कहाँ मिल सकते हैं? हम उससे कलीसिया में मिलते हैं। वह उसकी कलीसिया है; वह सर्वदा वहाँ होता है। उस में होने के लिए, हमें कलीसिया में होना पड़ेगा। हम उससे मण्डली में भी मिलते हैं (मत्ती 18:20)। लेकिन हमें प्रभु से मिलने के लिए किसी विशेष स्थान पर जाने की कोई आवश्यकता नहीं है; हम उससे कभी भी और कहीं भी मिल सकते हैं (देखें यूहन्ना 4:21-24)। जो कलीसिया

में हैं वे प्रभु में हैं, और प्रभु प्रत्येक मसीही में है। यदि आप मसीही हैं, तो मसीह तक आपकी पहुँच सदा बनी है।

समाप्ति नोट्स

[1]जॉन आई. डरहम, *एक्सोडस*, वर्ड बिब्लिकल कमेन्ट्री, वॉल्यूम 3 (वाको, टेक्स.: वर्ड बुक्स, 1987), 355. [2]जॉन जे. डेविस, *मोसिस एन्ड द गोड्स ऑफ़ इजिप्ट: स्टडीज़ इन एक्सोडस*, 2 एडीशन. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाऊस, 1986), 263. [3]KJV इब्रानी शब्द "पीतल" का अनुवाद करती है। अन्य अनुवादों में"काँसा" दिया हुआ है (NKJV; NASB; NRSV; NIV). आर. एलन कोल ने सुझाया कि यह धातु ताँबे की थी। (आर. एलन कोल, *एक्सोडस: एन इन्ट्रोडक्शन एन्ड कमेन्ट्री*, टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेन्ट कमेन्ट्रीज़ [डाउनर्स ग्रोव, इल्ल.: इन्टर-वर्सिटी प्रेस, 1973], 189.) [4]उपरोक्त, 190. [5]उपरोक्त, 189. [6]डरहम, 355. [7]कोल, 190. [8]उपरोक्त, 192. [9]उपरोक्त, 191. [10]रोनाल्ड एफ़. यंगब्लड, *एक्सोडस*, एवरीमेन्स बाइबल कमेन्ट्री (शिकागो: मूडी बाइबल इनस्टिट्यूट, 1983), 122.

[11]कोल, 191. [12]अंबरटो कस्सुटो, *अ कमेन्ट्री ऑन द बुक ऑफ़ एक्सोडस*, ट्रान्स. इस्राएल एब्राहम्स (जरुसलेम: मैगनेस प्रेस, 1997), 330. [13]विल्बर फील्ड्स, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडस,* बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज़ (जोपलिं, मो: कॉलेज प्रैस, 1976), 579. [14]कोल, 193. [15]ई. टी. कैसल, "आई एम अ स्ट्रेंजर हियर," *सोंग्ज़ ऑफ फेथ एण्ड प्रेज़,* कॉम्प. एण्ड एड. एल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, ला.: हॉवर्ड पबलिशिंग को., 1994).